संस्कृत लोक कथाएँ : उद्भव एवं विकास

डॉ. गोविन्द कुमार 'धारीवाल'
सहायक अध्यापक (हिन्दी)
रा. इ. का. धोपड़धार, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड
ई–मेल– gkdhariwal1987@gmail.com
मो.– 9536352124

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। उसी प्रकार लोक साहित्य को लोक जीवन का दर्पण मानना भी उचित ही होगा। साहित्य की विभिन्न विधाओं में कथा साहित्य लोक जीवन की निकटतम अभिव्यक्ति है। संस्कृत साहित्य में लोक कथाओं का आरंभ वेदों से माना गया है। लोक कथाओं का मूल स्रोत वेदों को मानना उचित होगा। लोक कथाओं के इतिहास को जानने के लिए सबसे पहले वेदों का अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि वेद ही प्रथम प्रमाण माने गए हैं। "लोक कथाओं का जन्म उस समय हुआ जब मनुष्य कल्पना कथा और इतिहास में अंतर नहीं कर सकता था। स्मृतिपटल पर जीवित रखने योग्य घटनाएँ जनजीवन में व्याप्त होकर लोक कथाओं अथवा गीतों के रूप में अमर हो जाती हैं। उन्हें चाहे कल्पना कहिए, कथा कहकर संबोधित करिए अथवा इतिहास के पन्नों में बांधिए।"[1] लोक कथा का आरंभ या मूल एक विशेष स्थान अथवा एक विशेष समय को नहीं माना जा सकता है। भले ही वह आरंभ में मौखिक परंपरा के आधार पर विश्व भर में फैली हो परंतु उसमें निहित ज्ञान भंडार आज के साहित्य से अधिक ज्ञानवर्धक सिद्ध हो रहा है।

लोक साहित्य की उत्पत्ति भारत में ही हुई अनेक विद्वानों ने इसे स्वीकार भी किया है। "कल्पना विश्वास तथा प्रथाएँ यत्र–तत्र–सर्वत्र रूप से विद्यमान होती हैं। मूल कथा की उत्पत्ति का कोई एकमात्र केंद्र नहीं हो सकता। जहाँ मानव समाज की ये मूल प्रवृत्तियाँ क्रियाशील हो रही वहीं उसका उद्भव भी स्वत: ही हो गया था। लोककथा की उत्पत्ति भारत में ही हुई, हम नहीं मान सकते।"[2] इस प्रकार लोककथा की उत्पत्ति के निष्कर्ष तक पहुँचना कठिन कार्य है, क्योंकि लोक साहित्य मौखिक परंपरा से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को गमन वाला साहित्य है। इसलिए इसे एक व्यक्ति अथवा एक समुदाय की रचना कहना भी उचित नहीं होगा। लोककथा मौखिक परंपरा के आधार पर लोक श्रुति के नाम से भी प्रख्यात हो गई है। "लोककथा वस्तुतः लोक की मौखिक अभिव्यक्ति है। यह साहित्य अभिजात्य, संस्कार शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना से शून्य होता है। यह किसी एक की कृति नहीं होती। परंपरा में मौखिक क्रम से यह अतीत से वर्तमान और वर्तमान से भविष्य में संचरण करता है। इसमें समूचे लोकमानस की प्रवृत्ति समाई रहती हैं।"[3]

लोक साहित्य को समाज की आत्मा का प्रतिबिंब भी कहा जा सकता है क्योंकि लोक साहित्य में समाज की वास्तविक दिशा और दशा का वर्णन मिलता है। यदि समाज के स्वरूप को जानना हो तो सबसे पहले उसके लोक साहित्य को जानना अति आवश्यक होता है। लोक साहित्य ही लोक जीवन का दर्पण होता है। जिसमें हमारी विशाल लोक संस्कृति का पुनीत इतिहास प्रतिबिंबित हुआ है। "किसी भी देश के ऐतिहासिक, साहित्यिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक जीवन की वास्तविकता को जानना हो तो लोक साहित्य ही प्रमाणिक आधार हो सकता है। जीवन के निश्चित और स्वभाविक रुप का दर्शन हमें लोक साहित्य में ही प्राप्त होता है।"[4]

प्राचीन काल की मौलिकता, परंपरा ही लोक साहित्य का आधार बनी है। मौखिक परंपरा के आधार पर पीढ़ी–दर–पीढ़ी से चली आई कथाओं को लोक साहित्य के नाम से जाना जाने लगा। साहित्य क्रियाकलापों के आधार पर आज इसे काव्य का रूप देकर साहित्य विधाओं में ढाल दिया गया है। "मौखिकता प्राचीन युग का संकेत है। जबकि मौखिक वाणी या मौखिकता एकमात्र साधन थी, जिसकी सहायता से मानवता ने प्राकृतिक शक्तियों के विरूद्ध संघर्ष किया और आने वाली पीढ़ियों को अपना अनुभव सौंपा। लेखन कला तो बहुत बाद में विकसित हुई फिर वह प्रभु वर्ग में ही सीमित रह गई सामान्य जनता तो इससे वंचित ही रही। साहित्यिक क्रियाकलाप की सुविधाओं और संभावनाओं से वंचित जनता ने अपनी समस्त सृजनात्मक शक्ति और कलात्मक शिल्प को मौखिक काव्य में ढाल दिया।"[5]

लोककथा का आरंभ काल वेदों से ही प्राप्त होता है। जिसे वेदों में आख्यान और संवाद सूक्त आदि नामों से जाना जाता है। ऋग्वेद में शुन–शेप आख्यान एक प्रसिद्ध आख्यान रहा है। उसी प्रकार ऋग्वेद के तृतीय मंडल का विश्वामित्र–नदी संवाद और दसवें मंडल में यम–यमी, पूरूरवा–उर्वशी, सरमा–पणि आदि संवाद शूक्तों में लोककथा की अद्भुत झांकी दिखाई देती है। इसी प्रकार यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में भी संवाद शूक्तों और आख्यानों के रूप में लोक कथाओं का वर्णन मिलता है। ब्राह्मण ग्रंथों में भी अनेक लोककथाएँ संग्रहित है। "शतपथ ब्राह्मण में पूरूरवा–उर्वशी की कथा, ताण्डव ब्राह्मण में च्वयन भार्गव और सुकन्या मानवी की कथा, ऐतरेय ब्राह्मण में शुन–शेप का आख्यान, शाटयान ब्राह्मण में महर्षि वृश नामक पुरोहित का आख्यान आदि का आधार तत्कालीन लोक में मौखिक प्रचलित कथाएँ ही हो सकती हैं।"[6]

लोककथाओं का प्रचलन वैदिक साहित्य में वेदों में और ब्राह्मण ग्रंथों के बाद उनसे साहित्य में भी प्रसिद्ध आख्यान और संवाद शुक्तों को लोककथा साहित्य के रूप में देखा जा सकता है। इस प्रकार वेदों में वर्णित आख्यान एवं संवाद सूक्त जनमानस के कल्याण के लिए महार्षियों द्वारा मंत्र उच्चारित एवं वर्णित किए गए। उपनिषद् ग्रंथों में अनेक ज्ञानवर्धक आख्यानों एवं संवाद शूक्तों का वर्णन मिलता है, जो संस्कृत लोक साहित्य के उद्भव के साथ–साथ उनके विकास क्रम में भी मजबूती देते हैं। "उपनिषद् साहित्य में कठोपनिषद् में नचिकेता की कथा, कनोपनिषद् में अग्नि और यक्ष की कथा, वृहदारण्योपनिषद् में याज्ञवल्क्य–गार्गी की कथा तथा देवासुर संग्राम की कथा, छन्दोग्य उपनिषद् में सत्यकाम–जावाली की कथा एवं श्वान कथा आदि कथाएँ लोक से ही ग्रहण की गई होगी।"[7]

लोककथा की मौखिक परंपरा में प्रचलित आख्यानों, गाथाओं एवं शूक्तों का संकलन करने वाले घराने प्राचीन भारत में ही विद्यमान थे। क्योंकि प्राचीन भारत में वेदों की महत्वता से लोककथा से लोक साहित्य का उद्भव होता है। वैदिक संस्कृत साहित्य में विरचित आख्यान गाथाएँ एवं संवाद सूक्त वर्तमान लोककथा में प्रचलित हो गए हैं। लौकिक संस्कृत साहित्य का वृहत् महाकाव्य महाभारत भी लोक आख्यानों से अछूता नहीं रहा है। महाभारत महाकाव्य में भी अनेक संवाद सूक्त मिलते हैं, जो लोक साहित्य के साथ साथ महाभारत को ओर अधिक विशाल बना देते हैं। "महाभारत न केवल इतिहास, धर्मशास्त्र एवं पुराण ही नहीं है अपितु उसके आख्यान, उपाख्यान, संवाद रूप में तत्कालीन समाज में प्रचलित लोक कथाओं का विशाल संकलन भी है। जिसके संग्राहक सूत्र थे।"[8]

महाभारत एक वृहताकार महाकाव्य है। जिसमें अनेक रूप और अंग है जो उसके वृहताकार का ओर अधिक महत्व बढ़ा देते हैं। महाभारत को अख्यानों एवं उपाख्यानों के साथ–साथ लोककथाओं का भी महाकाव्य कहा जा सकता है। क्योंकि इसमें अनेक ज्ञानवर्धक लोककथाएँ प्रचलित हैं। "महाभारत में सर्प कथा भी पाई जाती हैं– सर्प की दों जिह्वाएँ क्यों होती हैं? महाभारत में बकासुर वध कथा, हिडिंबा वध कथा, स्वर्णकमल कथा, शकुंतला उपाख्यान, नल–दमयंती कथा, द्रोणाचार्य–एकलव्य की कथा आदि लोककथाएँ ही तो है।"[9]

आज आधुनिक युग में हिंदी साहित्य अथवा अन्य साहित्य में भी लोक साहित्य को लिखा जा रहा है । परंतु लोक साहित्य का आधार हमारे वैदिक काल के ग्रंथ ही है। अनेक विद्वानों ने अनेक भाषाओं में लोक साहित्य को लिखा । वैदिक भाषा में रचित आख्यानों को अपनी भाषाओं में बदला न कि प्राचीन काल के प्रचलित आख्यानों को । क्योंकि प्राचीन काल के आख्यान वैसे के वैसे ही रहे जैसे वैदिक काल में प्रचलित थे । वैदिक काल के प्रचलित आख्यानों एवं संवाद सूक्तों को आधार बनाकर लौकिक साहित्य में अनेक संस्कृत विद्वानों ने संस्कृत ग्रंथों को लिखा गया । परंतु उनके आख्यान वैसे ही थे जैसे वैदिक काल के ज्ञानवर्धक व्याख्यान । वैदिक काल के ज्ञान भंडार को लोक साहित्य के माध्यम से संपूर्ण समाज के सामने रखा । इसी प्रकार वैदिक काल का वैदिक साहित्य में रचित प्रचलित आख्यान जिस प्रकार प्रसिद्ध रहे उसी प्रकार महाभारत महाकाव्य के अधिकतम आख्यानों एवं उपाख्यानों को आधार बनाकर अनेक कव्यों एवं महाकाव्यों की रचना भी की गई । वाल्मीकि कृत रामायण में वर्णित आख्यानों को आधार बनाकर अनेक काव्य और महाकाव्य की रचना की गई । वेदव्यास द्वारा रचित 'महाभारत' तथा वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' दोनों ही महाकाव्य लोककथा के लिए प्रसिद्धि ले रहे हैं । दोनों ही महाकाव्यों में अनेक प्रकार की लोककथाएँ जन समाज में प्रचलित थी । "वैदिक कथाओं का रूप पुराणों में, रामायण में, महाभारत में एवं परवर्ती लोक साहित्य में आने पर अवश्यमेव किंचित परिवर्तित हुआ । परंतु आख्यान वही रहा । तदनंतर रामायण और महाभारत तो परवर्ती कवियों के लिए उपजीव्य काव्य बन गए । इसमें से कथावस्तु लेकर तथा उस समय के समाज से जोड़कर साहित्य रचा जाने लगा ।"[10]

लोक में प्राचीन काल से ही लोकवाणी में पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक परंपरा में कथाएँ कही सुनी जाती रही है । गुणाढय ने भी ऐसे ही कथाओं को लोक व्यवहार में पैचासी प्राकृत भाषा में संग्रहित किया है । वृहत्कथा साहित्य में वर्णित लोक कथाएँ प्राचीन काल में लोक व्यवहार से संबंधित संवादों से परिपूर्ण थी । वैदिक काल के आख्यानों और संवाद सूक्तों को ओर अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक कवियों ने अनेक भाषाओं में संवादों को संग्रहित किया गया है । गुणाढ़य ने भी वृहत्कथा में अनेक लोक व्यवहार की कथाओं को संकलित करके और अधिक रोचक बनाया है । "गुणाढय ने लोक जीवन से जुड़ी कथाओं को रोचक एवं कुतूहलपूर्ण बनाने के लिए देव और मनुष्य के बीच एक कल्पना निर्मित विद्याधरों, किन्नरों एवं गंधर्वों की योनि की सृष्टि की हो या उस समय में कोई जातियाँ भी रही हो एवं यह भी संभव है कि यह कथाएँ जिस रूप में वृहत्कथा में संकलित हुई उस रूप में लोक व्यवहार में भी प्रचलित रहे हो । लोकजीवन वैसे भी अनेक समस्याओं, अभावों एवं कष्टों से ग्रस्त है । अतः मनोरंजन के लिए परी कथाएँ लोक व्यवहार में प्रचलित रही हो ।"[11]

संस्कृत साहित्य में लोक कथाओं की मौखिक परंपरा वृहत्कथा में संकलित कथाएँ जनजीवन से जुड़ी कथाएँ संकलित रही है परंतु इन कथाओं को आधार बनाकर अनेक कवियों ने काव्य की रचना की । "वृहत्कथा भारतीय साहित्य में सर्वाधिक लोकप्रिय रही है । इसे आधार बनाकर कई संस्कृत नाटक एवं कथा ग्रंथ रचे गए हैं ।"[12] संस्कृत के अनेक कवियों ने लोक जनमानस की कथाओं को अपने ग्रंथों में स्थान दिया है । संस्कृत साहित्य के कुलश्रेष्ठ उपमा कवि कालिदास ने अपने सभी ग्रंथों में लोक जीवन की कथाओं को संग्रहित किया है । महाभारत का प्रसिद्ध आख्यान शकुंतलोपाख्यान से अभिज्ञानशाकुंतलम् नामक नाटक की रचना की । जो संस्कृत साहित्य ही नहीं विश्व साहित्य का सर्वश्रेष्ठ नाटक माना जाता है । कालिदास द्वारा अन्य रचनाएँ मेघदूत खण्डकाव्यम्, ऋतुसंहार खण्डकाव्यम्, कुमारसंभव महाकाव्यम्, रघुवंश महाकाव्यम्, और मालतीमाधव नाटकम् और विक्रमोर्वशीय नाटकम् में सभी प्रचलित कथाओं को संकलित करके साहित्य को ओर अधिक प्रभावशाली और रोचक बनाया है । इसी प्रकार अनेक संस्कृत विद्वानों ने प्राचीन आख्यानों एवं लोक जीवन से जुड़ी कथाओं को अपने महाकाव्यों एवं नाटकों में संग्रहित किया गया है । आचार्य दण्डी का दशकुमारचरितम्, बाणभट्ट की कादंबरी कथा साहित्य, महाकवि शुद्रक का मृच्छकटिकम् नामक प्रकरण, महाकवि भारवि का किरातार्जुनीयम् महाकाव्यम्, श्रीहर्ष का नैषधीयचरितम् महाकाव्यम्, महाकवि माघ का

शिशुपालवधम् महाकाव्यम्, हर्षवर्धन की रत्नावली नाटिका, विष्णु शर्मा का विश्व प्रसिद्ध पंचतंत्र कथा साहित्य ग्रंथ, पंडित नारायण द्वारा विरचित हितोपदेश कथा साहित्य ग्रंथ और महाकवि भास द्वारा रचित नाटक आदि ग्रंथों में भी प्राचीन काल की लोक जीवन की कथाएँ एवं जनमानस में प्रचलित झांकियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती है ।

लोक कथाओं पर आधारित आचार्य सोमदेव द्वारा रचित कथा साहित्य ग्रंथ कथासरित्सागर संस्कृत साहित्य का नहीं अपितु विश्व साहित्य का शिरोमणि ग्रंथ माना जाता है । आचार्य सोमदेव ने लोक व्यवहार से जुड़ी सभी लोक कथाओं को इस ग्रंथ में संकलित किया है । "कथासरित्सागर ऐसी कथाओं का आधार है जिसको पढ़ने के लिए गहन आनंद की अनुभूति होती हैं । जिसकी कथा कहने की शैली भी विचित्र है । जिसमें एक कथा से दूसरी कथा निकलती चली जाती है । आचार्य सोमदेव ने सरल एवं अकृत्रिम रहते हुए आकर्षण और सुंदर रूप से ऐसी–ऐसी कथाओं को बड़ी भारी संख्या में प्रस्तुत किया गया है ।"[13]

लोक कथाओं के प्रचलित कर्म में अनेक विद्वानों ने लोककथा साहित्य को तत्कालीन समाज का वास्तविक दर्पण भी माना है । क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण होता है । साहित्य में अनेक लोक जीवन की प्रचलित झांकियाँ और पीढ़ी–दर–पीढ़ी चली आ रही मौखिक परंपराएँ भी समाज की पृष्ठभूमि का ज्ञान कराती हैं । संस्कृत साहित्य में अनेक परंपराएँ व लोक आधारित रीतियों का वर्णन साहित्य ग्रंथों में मिलता है । "कथासरित्सागर में पारंपरिक पीढ़ी–दर–पीढ़ी प्रचलित लोक विश्वास, धार्मिक विश्वास, रक्तपान करने वाले बेताल, प्रेम और मूर्खों से जुड़ी कथाएँ संग्रहित है । इसमें अद्भुत कथाओं और उसके साथी प्रेमियों, राजाओं, नगरों, राजतंत्र एवं षडयंत्र, जादू और टोने, छल और कपट, हत्या और युद्ध, रक्त पीने वाले बेताल, पिशाच, यक्ष और प्रेत, पशु–पक्षियों की सच्ची गढ़ी कहानियाँ और भीखमंगे साधु, पियक्कड़, जुवारी, वेश्या, विट, कुट्टनी इन सभी की कहानियाँ एकत्र हो गई है ।"[14]

लोककथा साहित्य लोक जनमानस का विशाल साहित्य हैं । इस साहित्य में जनमानस के संपूर्ण इतिहास का वास्तविक दर्शन देखने को मिलता है । आधुनिक युग में कुछ भारतीय विद्वानों और पाश्चात्य विद्वानों ने इस लोक साहित्य को गवार, ग्रामीण, असभ्य, अशिक्षित, अनपढ़ आदि शब्दों से इसको परिभाषित किया हो, परंतु यह वैसा साहित्य नहीं है । लोक साहित्य लोक जीवन की जीवंत एवं पुनीत विधा है । लोक साहित्य प्राचीन वैदिक साहित्य के संवाद सूक्तों और आख्यानों का सार अंश है । यदि वैदिक साहित्य असभ्य और औचित्य हीन साहित्य हो तो आज का लोक साहित्य भी वैसा ही माना जा सकता है । लोक साहित्य का शुद्धतम रूप श्रोताओं का मनोरंजन कराता और साथ ही प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में उनका ज्ञान वर्धन भी कराता । लोक कथाएँ सुखांत होती थी । इसमें अद्भुत रस की प्रधानता होती और उत्सुकता एवं कुतूहल की सृष्टि करती । संस्कृत साहित्य की लोक कथाएँ तीन रूप में प्राप्त होती हैं– गद्यमय में रूप, पद्यमय में रूप और गद्यमय पद्यमय दोनों रूपों में । लोक कथाएँ पीढ़ी–दर–पीढ़ी की परंपराओं के रूप में गमन शील होती रही । आज इसको लिपिबद्ध किया जा रहा है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. डॉ स्वर्णलता, लोक साहित्य विमर्श, रत्न स्मृति प्रकाशन बीकानेर, पृष्ठ सं– 41
2. डॉ प्रभाकर नारायण, संस्कृत साहित्य में नीति कथाओं का उद्भव एवं विकास, चौखंबा संस्कृत सीरीज वाराणसी, पृष्ठ सं– 120
3. रामप्रसाद दाधीच, राजस्थानी लोक साहित्य के अध्ययन के आयाम, जैन एँड संस जोधपुर, पृष्ठ सं– 04
4. डॉ स्वर्णलता, लोक साहित्य विमर्श, रत्न स्मृति प्रकाशन बीकानेर, पृष्ठ सं– 09
5. डॉ केसरी नारायण शुक्ल, रूसी लोक साहित्य, हिंदी समिति सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, पृष्ठ सं– 03–04
6. डॉ गोपाल शर्मा, संस्कृत लोककथा में लोकजीवन, हंसा प्रकाशन जयपुर, पृ सं– 16

7. वही पृष्ठ सं– 16
8. वही पृष्ठ सं– 16
9. वही पृष्ठ सं– 16
10. वही पृष्ठ सं– 16
11. वही पृष्ठ सं– 17
12. वही पृष्ठ सं– 17
13. वही पृष्ठ सं– 24
14. वही पृष्ठ सं– 25

साहित्याकाश